सांगठनिक लाइन

आज भारत में कोई एकीकृत अखिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी नहीं है। समस्त कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन छोटे-छोटे ग्रुपों में विभक्त हैं। हालांकि इनमें से कई ग्रुप अपने आप को कम्युनिस्ट पार्टी कहते हैं, लेकिन यह यथार्थ नहीं है।

भारत के कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन की इस सांगठनिक अवस्था में किसी भी ग्रुप की सांगठनिक लाइन में वर्तमान ग्रुप और भावी अखिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी दोनों के तत्व विद्यमान होंगे। सांगठनिक लाइन वर्तमान और भविष्य दोनों को अपने में समाहित किये होगी।

इस सांगठनिक लाइन में तीसरे इंटरनेशनल द्वारा स्थापित सर्वमान्य सांगठनिक लाइन के सारतत्व तो समाहित होंगे ही परन्तु साथ ही भारत के कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन की वर्तमान स्थिति के अनुरूप कुछ विशिष्ट तत्व भी होंगे। इस तरह की एक मुकम्मल सांगठनिक लाइन का विकास ही भारत की एकीकृत कम्युनिस्ट पार्टी के गठन और निर्माण के कार्य को सही तरह से अंजाम दे सकेगा।

कम्युनिस्ट पार्टी मानव इतिहास के सबसे क्रांतिकारी वर्ग—सर्वहारा वर्ग की पार्टी होती है। यह केवल और केवल इसी वर्ग की पार्टी होती है, किसी अन्य वर्ग की नहीं। यह मजदूर वर्ग का अगुआ दस्ता, उसका आम सदर मुकाम होती है। यह मजदूर वर्ग का उच्चतम्, सबसे ज्यादा संगठित दस्ता होती है।

इस कम्युनिस्ट पार्टी का उद्देश्य सर्वहारा के नेतृत्व में क्रांति के मित्र वर्गों को साथ लेकर शत्रु वर्गों की सत्ता उखाड़ फेंकना, सर्वहारा अधिनायकत्व की स्थापना करना तथा अंततः वर्ग-विहीन, कम्युनिस्ट समाज की स्थापना करना होता है।

यह कम्युनिस्ट पार्टी क्रांति का माध्यम होती है। इस पार्टी के बिना सर्वहारा निहत्था होता है। सर्वहारा अपने को केवल इस कम्युनिस्ट पार्टी में संगठित करके ही क्रांति को अंजाम दे सकता है और वर्ग-विहीन समाज की स्थापना की ओर बढ़ सकता है।

यह कम्युनिस्ट पार्टी अपने लक्ष्य को हासिल कर सके इसके लिए आवश्यक है कि इसके पास एक कम्युनिस्ट चेतना सम्पन्न, अनुभवी और स्थाई केन्द्रीय नेतृत्व हो जो क्रांति के हर उतार-चढ़ाव में पार्टी और इसके माध्यम से सर्वहारा का नेतृत्व कर सके।

भारत में इस तरह की कम्युनिस्ट पार्टी का गठन और निर्माण करने के लिए यह जरूरी है कि कम्युनिस्ट संगठनों के काम को औद्योगिक मजदूर वर्ग में और उसमें भी बड़े औद्योगिक केन्द्रों के मजदूर वर्ग में केन्द्रित किया जाय। कम्युनिस्ट पार्टी मजदूर वर्ग की पार्टी है। इसीलिए यह आवश्यक है कि मजदूर वर्ग सशरीर इस पार्टी में मौजूद हो। यही नहीं, ज्यादा से ज्यादा मजदूर साथियों को पार्टी के नेतृत्व में लाने का प्रयास किया जाना चाहिए। केवल इस तरह ही कम्युनिस्ट पार्टी सही मायने में सर्वहारा वर्ग की पार्टी बन सकती है।

इसके साथ ही, जहां तक सम्भव हो, अन्य मजदूरों में तथा खासकर देहाती सर्वहारा वर्ग (अर्द्ध-सर्वहारा समेत) में भी काम किया जाना चाहिए। शहरी बुद्धिजीवी वर्ग, खासकर छात्र-नौजवान समुदाय पार्टी के कार्य का एक अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र बनता है। देहातों में छोटे किसानों को भी क्रांति की और आकर्षित करने का प्रयास करना चाहिए। लेकिन प्राथमिकता हमेशा औद्योगिक मजदूर वर्ग को दी जानी चाहिए।

वैसे तो आम तौर पर, लेकिन भारत के कम्युनिस्ट आंदोलन के वर्तमान दौर में खास तौर पर, कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्यता के मापदंड कठोर होने चाहिए। केवल क्रांति की भावना से सराबोर, बलिदान का जज्बा रखने वाले अनुशासित सदस्यों से बनी पार्टी ही भारतीय क्रांति की वर्तमान चुनौतियों से निपट सकती है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओ विचारधारा से लैस होना तथा पार्टी के कार्यों में नियमित सक्रियता इस सदस्यता की बुनियादी शर्तें होंगी। साथ ही पार्टी अनुशासन को सही तरह से लागू करने के लिए आवश्यक होगा कि प्रत्येक सदस्य

किसी न किसी पार्टी संगठन (इकाई, कमेटी, आयोग इत्यादि) में शामिल होकर कार्य करे। परिस्थिति विशेष या अन्य किसी चीज का हवाला देकर पार्टी की सदस्यता के मापदंड को ढीला नहीं किया जाना चाहिए। कम्युनिस्ट पार्टी मजदूर वर्ग के जन-जन की पार्टी बन जाय इसके लिए पार्टी सदस्यता की शर्तों को ढीला करना अक्षम्य होगा। इसके बदले पार्टी को कठोर मेहनत और संघर्ष करके, अपने सदस्यों की गुणवत्ता को बरकरार रखते हुए करोड़ों-करोड़ मजदूर जनता को अपने पीछे लामबन्द करने का प्रयास करना चाहिए।

कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों की गुणवत्ता और इस तरह समस्त पार्टी की गुणवत्ता के मामले में विचारधारा के महत्व को आज किसी भी तरह कम करके नहीं आंका जाना चाहिए। दुनिया भर में कम्युनिस्ट आंदोलन के पीछे हटने और सर्वहारा विचारधारा पर बुर्जुआ वर्ग के भीषण हमले के इस दौर में, जबकि स्वयं कम्युनिस्ट आंदोलन के भीतर सर्वहारा विचारधारा को लेकर शंका-संदेह और विभ्रम मौजूद हों, तब सही मार्क्सवादी विचारधारा को पार्टी सदस्यों के बीच स्थापित करने के कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता में रखा जाना चाहिए। पार्टी सदस्यता देने के समय विचारधारात्मक परिपक्वता की सख्ती से छान-बीन की जानी चाहिए तथा केवल मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओ विचारधारा से लैस लोगों को ही सदस्यता दी जानी चाहिए।

ऐसी पार्टी की रीढ़ पेशेवर क्रांतिकारियों का समूह होनी चाहिए। बुनियादी इकाइयों को छोड़कर ऊपर की सभी पार्टी कमेटियां पेशेवर क्रांतिकारियों को लेकर बनी होनी चाहिए। पेशेवर क्रांतिकारी के मापदंडों का भी कड़ाई से पालन किया जाना चाहिए। भारत के कम्युनिस्ट आंदोलन के वर्तमान टूट-फूट और बिखराव के दौर में पेशेवर क्रांतिकारी के मापदंडों का भी बहुत ज्यादा तनुकरण (dilution) हुआ है। इस प्रवृत्ति को खत्म किया जाना चाहिए और सही मायनों में पेशेवर क्रांतिकारियों की फौज तैयार की जानी चाहिए।

पार्टी का नेतृत्व सही नेतृत्व प्रदान कर सके इसके लिये जरूरी है कि हर स्तर पर नेतृत्व के लोग आम के साथ विशिष्ट को मिलाएं। वे न केवल आम दिशा-निर्देश दें बल्कि व्यक्तिगत स्तर पर ठोस व्यवहार में उतरकर उसे समृद्ध करें।

कम्युनिस्ट पार्टी वास्तव में कम्युनिस्ट पार्टी बन सके इसके लिए आवश्यक है कि इसका एक औपचारिक ढांचा हो और सुपरिभाषित नियमों के तहत इसका संचालन हो। गैर-कानूनी और भूमिगत कम्युनिस्ट पार्टी के ऊपर से नीचे तक औपचारिक संचालन की अपनी सीमाएं होती हैं और हमें किसी भी तरह औपचारिकतावाद का शिकार नहीं होना चाहिए। लेकिन इसके बावजूद जहां तक संभव हो, इसका ढांचा और संचालन औपचारिक होना चाहिए। पार्टी में सभी सदस्यों के अधिकार और कर्तव्य, चाहे वे किसी भी स्तर पर हों, स्पष्ट परिभाषित होने चाहिए। बिना अधिकार के कर्तव्य या बिना कर्तव्य के अधिकार की स्थिति कभी नहीं होनी चाहिए।

कम्युनिस्ट पार्टी को जनवादी केन्द्रीयता के उसूल का पालन करना चाहिए। आज जबकि पार्टी छोटे-छोटे पार्टी संगठनों, ग्रुपों में विभक्त है तब भी इन ग्रुपों को जनवादी केन्द्रीयता के उसूलों का ही पालन करना चाहिए। यह कहना कि जनवादी केन्द्रीयता के उसूल पार्टी के लिए हैं, ग्रुपों पर वे लागू नहीं होते, गलत है। यह सही है कि छोटे-छोटे ग्रुपों में जनवादी केन्द्रीयता के उसूल को उस तरह लागू नहीं किया जा सकता, जिस तरह पार्टी में। लेकिन इसके बावजूद इन ग्रुपों का संचालन भी इसी उसूल के तहत किया जाना चाहिए। सच तो यह है कि किसी अन्य उसूल के तहत कम्युनिस्ट पार्टी संगठनों (ग्रुपों) का संचालन असंभव है।

इसी तरह यह कहना भी गलत है कि कम्युनिस्ट आंदोलन के वर्तमान टूट-फूट के दौर में केन्द्रीयता पर कम और जनवाद पर ज्यादा जोर दिया जाना चाहिए। यह कहना जनवादी-केन्द्रीयता के सारतत्व का ही निषेध है। कम्युनिस्ट पार्टी में (और ग्रुपों में भी) केन्द्रीयता जनवाद की ही संकेन्द्रित अभिव्यक्ति होती है। अतः यदि किसी संगठन में जनवाद नहीं होता तो वहां केन्द्रीयता भी नहीं होती। वहां व्यक्तियों की तानाशाही होती है।

जनवादी केन्द्रीयता के उसूल पर चलने वाली इस पार्टी में गुटों के लिए और गुटबाजी के लिए कोई स्थान नहीं होता। पार्टी में किसी भी तरह के गुट के लिए इजाजत नहीं दी जा सकती।

इसके साथ ही पार्टी में उठने वाली बहसों का सही तरह से संचालन किया जाना चाहिए। अंतः पार्टी संघर्ष का सही तरह से संचालन पार्टी के लगातार विकास की शर्त है। इसके विपरीत इस संघर्ष को सही तरह से न

संचालित करने से पार्टी संगठन में टूट-फूट और बिखराव की स्थिति पैदा होती है पार्टी में बहस के सही तरह से संचालन के लिए उपयुक्त मेकेनिज्म का विकास किया जाना चाहिए।

एक कसी हुई, अनुशासित पार्टी के लिए आवश्यक है कि इसमें सांगठनिक अवसरवाद को प्रश्रय न दिया जाय। पार्टी सदस्यों की कमजोरियों को दूर करने के लिए आलोचना-आत्मआलोचना के हथियार का दक्षता के साथ इस्तेमाल करना चाहिए। साथ ही पूरी पार्टी को भी अपनी कमियों को दूर करने के लिए आलोचना-आत्मआलोचना की पद्धति का पालन करना चाहिए।

परन्तु यदि यह आलोचना-आत्मआलोचना जन-संघर्षों से अलग थलग की जाती है तो यह आध्यात्मवादी बन जायगी। केवल जन-संघर्षों में उतर कर ही कोई पार्टी तप कर फौलाद बनती है। जन-संघर्षों में ही पार्टी और उसके सदस्य अपनी कमजोरियों से रूबरू होते हैं और वहीं से इन कमजोरियों के दूर होने का रास्ता प्रशस्त होता है। जन-संघर्षों से दूर रहकर कम्युनिस्ट रूपान्तरण की सारी बातें आध्यात्मवादी बन कर रह जाती हैं।

भारतीय कम्युनिस्ट आंदोलन के वर्तमान टूट-फूट के दौर में जन-संघर्षों की अहमियत इसलिए भी है कि इसके माध्यम से सभी ग्रुप अपनी रणनीति और रणकौशल की कमियों से परिचित होते हैं और इस तरह उसे और विकसित करते हैं। इससे सभी ग्रुपों की रणनीति और रणकौशल की एकरूपता का मार्ग प्रशस्त होता है। इससे वह आम, सामूहिक आधार विकसित होता है जो ग्रुपों को एकता की ओर ले जाता है।

व्यापक जनता में पार्टी का आधार बनना और जनता का पार्टी के पीछे गोलबन्द होना जन-संघर्ष का एक अन्य पहलू है।

इन जन-संघर्षों के संचालन के लिए और जनता में पार्टी के अन्य कामों के लिए भी औपचारिक जन-संगठनों का निर्माण किया जाना चाहिए। हालांकि कठोर दमन की स्थितियों में इन जन-संगठनों का औपचारिक संचालन काफी मुश्किल या यहां तक कि असंभव भी हो सकता है, तब भी जहां तक संभव हो इनका औपचारिक गठन और संचालन किया जाना चाहिए। इसके माध्यम से पार्टी की जनता के प्रति जवाबदेही सुनिश्चित होती है। यह जवाबदेही पार्टी निर्माण में सहायक होती है।

इन जन-संगठनों में जन-दिशा का पालन किया जाना चाहिए। कोशिश की जानी चाहिए कि इन जन-संगठनों का जनचरित्र उभरे और लाखों-करोड़ों जनता इनमें गोलबन्द हो जाय। जन-संगठनों के संचालन में संकीर्णतावाद, हिरावलवाद, स्वतः स्फूर्ततावाद और पुछल्लावाद से बचना चाहिए।

जन-संगठनों को पार्टी का मुखौटा संगठन (frontal organisation) नहीं बनाना चाहिए। यदि किसी स्थिति में पार्टी को मुखौटा संगठनों की जरूरत पड़ती है तो उनका अलग से गठन किया जाना चाहिए। वास्तविक जन-संगठनों को जनता का ही संगठन बनाने का प्रयास करना चाहिए जिसे पार्टी अपने राजनीतिक प्रभाव से निर्देशित करती है।

कम्युनिस्ट आंदोलन के आज के बिखराव की अवस्था में जन-संगठनों का गठन और निर्माण इस तरह से किया जाना चाहिए कि उनमें एक से ज्यादा कम्युनिस्ट क्रांतिकारी ग्रुप कार्य कर सकें। यह कम्युनिस्ट आंदोलन की एकता में भी सहायक की भूमिका अदा करेगा। एक ही जन-संगठन में कार्य करने वाले कई कम्युनिस्ट क्रांतिकारी ग्रुपों से, ऐसे में बहुत सुलझी हुयी जन-दिशा की मांग बनती है।

संयुक्त-मोर्चे का निर्माण और इसका सही तरह से संचालन जन-संघर्षों को आगे बढ़ाने और क्रांति के लिए आवश्यक है। यह संयुक्त मोर्चा तात्कालिक तथा दीर्घकालिक दोनों हो सकता है यह छोटे से छोटे मुद्दे से लेकर बड़े से बड़े मृद्दे पर बनाया जा सकता है। किन्हीं मुद्दों पर यह शत्रु वर्गों के साथ भी बनाया जा सकता है। संयुक्त-मोर्चे के निर्माण और संचालन में संकीर्णतावाद से बचना चाहिए तथा जनवाद का पालन किया जाना चाहिए।

जन-संघर्ष तथा जनता के बीच पार्टी द्वारा किये जाने वाले सभी प्रचार और उद्वेलन अपने रूप और अंर्तवस्तु दोनों में क्रांतिकारी होने चाहिए। इस प्रचार और उद्वेलन को, अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन की शानदार परंपराओं, खासकर बोल्शेविक पार्टी की परंपराओं के अनुरूप होना चाहिए। ये प्रचार और उद्वेलन इस तरह से निर्मित होने चाहिए कि वे अपने लक्षित वर्गों, तबकों या समूहों का प्रभावित कर सकें। प्रचार और उद्वेलन में हिरावलवाद और पुछल्लावाद दोनों को कोई जगह नहीं मिलनी चाहिए। कहने की बात नहीं कि प्रचार और उद्वेलन इस रूप में चलाए जाने चाहिए कि वे व्यापकतम आबादी को समेट सकें।

लेकिन हमारे जन-संघर्षों और प्रचार व उद्वेलन को अर्थवाद और सुधारवाद से मुक्त होना चाहिए। भारतीय कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन अपने मौजूदा दौर में अर्थवाद और सुधारवाद से बुरी तरह ग्रस्त है। जनता की आंशिक मांगों के लिए चलने वाले संघर्ष, खास कर किसानों की आंशिक मांगों के लिए संघर्ष में तो यह प्रवृत्ति चरम पर है। बहुत सचेत तौर पर अर्थवाद और सुधारवाद की इस प्रवृत्ति से संघर्ष किया जाना चाहिए और कम्युनिस्ट आंदोलन को इससे मुक्त किया जाना चाहिए।

अर्थवाद और सुधारवाद की प्रतिक्रिया स्वरूप जनता की आंशिक मांगों के लिए संघर्ष से किनाराकशी तथा आंतकवाद की प्रवृत्ति भी भारतीय कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन में मौजूद है। बल्कि कुछ ग्रुपों के मामले में तो अर्थवाद-सुधारवाद और आंतकवाद की प्रवृत्ति साथ-साथ मौजूद है। इस प्रवृत्ति से भी तीखे संघर्ष की जरूरत है।

भारत के मजदूर आंदोलन में सुधारवाद बहुत बुरी तरह से हावी है। यह मूलतः संशोधनवादी पार्टियों के मजदूर आंदोलन में नेतृत्वकारी स्थिति में होने के कारण है। इन पार्टियों और बुर्जुआ पार्टियों के नेतृत्व में मजदूर आंदोलन (ट्रेड-यूनियन आंदोलन) में एक ऐसा नौकरशाहना दलाल नेतृत्व पैदा हुआ है जो आज मजदूर आंदोलन के क्रांतिकारी दिशा में बढ़ने के रास्ते में मुख्य बाधा है। यह ट्रेड-यूनियन नेतृत्व ज्यादातर 1990 के पहले के कल्याणकारी राज्य के दौर की पैदाइश है और उसी के अनुसार ढला हुआ है। यह शासक वर्ग की नयी निजीकरण-उदारीकरण-वैश्वीकरण की नीति के तहत होने वाले उसके आक्रमण को झेलने और उसका प्रतिरोध करने में पूर्णतया अक्षम है इसको हटाकर नया जुझारू नेतृत्व ही अब मजदूर आंदोलन को आगे बढ़ा सकता है। इस नये नेतृत्व को ट्रेड-यूनियन के संचालन की वर्तमान पद्धति को भी आमूल-चूल बदलना पड़ेगा।

इसको अंजाम देने के लिए मजदूरों के एक जन-राजनीतिक केन्द्र का निर्माण करने की आवश्यकता है। यह जन-राजनीतिक केन्द्र वर्ग सचेत मजदूरों को लेकर बना होगा। यह केन्द्र अपनी चेतना में ट्रेड-यूनियन से ऊपर लेकिन कम्युनिस्ट पार्टी से नीचे होगा। लेकिन इसे बनाते समय विसर्जनवाद और अराजकतावादी-संघातिपत्यवाद के खतरे के प्रति पूर्ण सचेत रहना होगा।

उपरोक्त सभी गतिविधियों को अंजाम देते हुए सभी ग्रुपों की कार्यवाहियां एक एकीकृत अखिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के निर्माण की ओर उन्मुख होनी चाहिए। एक एकीकृत अखिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का गठन और निर्माण आज सभी कम्युनिस्ट क्रांतिकारी ग्रुपों का केन्द्रीय कार्यभार होना चाहिए। अपने ग्रुप की सारी कार्यवाहियां और उनका प्रस्थान बिन्दु इसी के मातहत होना चाहिए।

भारत एक बहुराष्ट्रीयताओं वाला देश है। लेकिन भारत की कम्युनिस्ट पार्टी अलग-अलग राष्ट्रीयताओं की कम्युनिस्ट पार्टियों का संघ नहीं होगी। समस्त भारत की एक एकीकृत कम्युनिस्ट पार्टी होगी।

आज भारत में एक एकीकृत अखिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का गठन और निर्माण केवल सभी या अधिकांश कम्युनिस्ट क्रांतिकारी ग्रुपों के एक मंच पर आने से ही हो सकता है। इसके बरकस यह सोच गलत है कि कोई एक अकेला ग्रुप खुद ही किसी दिन अखिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का स्वरूप ग्रहण कर लेगा तथा बाकी ग्रुप या तो उसमें समाहित हो जाऐंगे या विलीन हो जायेंगे।

इस स्थिति में अपने ग्रुप तक सीमित रहने की, बाकी ग्रुपों के खिलाफ गैर- राजनीतिक तरीके से अपने ग्रुप के सुदृढ़ीकरण करने की तथा रणनीति और रणकौशल के सवालों के आधार पर दूसरे ग्रुपों को गैर-क्रांतिकारी घोषित करने की प्रवृत्ति संकीर्णतावाद की अभिव्यक्ति है और बेहद गलत है। यह समूचे कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन को कमजोर करती है और उसकी एकता के रास्ते में बाधा बनती है।

भारतीय कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन के वर्तमान टूट-फूट और बिखराव के भौतिक तथा साथ ही विचारधारात्मक और राजनीतिक कारण हैं। इस टूट-फूट और बिखराव को गैर-राजनीतिक दृष्टिकोण से देखना, इसके पीछे गैर-राजनीतिक कारण देखना निहायत गलत है। नेतृत्व के लोगों के आपसी संबन्धों, उनके अहं इत्यादि में इसे तलाशना तो और भी गलत है। यह एक अत्यन्त व्यापक और भौतिक समस्या को व्यक्तिवादी -भाववादी दृष्टिकोण से देखना होगा।

विचारधारा और रणनीति के बड़े सवालों पर तो क्या रणकौशल और कार्यशैली के छोटे-छोटे सवालों पर भी छोटे-छोटे पार्टी संगठनों में यदि फूट हो जाती है तो इसके कारण व्यक्तियों का आपसी टकराव नहीं बल्कि यह होता है

कि इन छोटे-छोटे संगठनों लिए ये छोटे सवाल ही काफी बड़े साबित होते हैं। जिन छोटे-छोटे सवालों को एक सुगठित और मंजी हुयी अखिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी चुटकियों में हल कर देती वे ही इन छोटे-छोटे संगठनों के लिए भारी पड़ जाते हैं और जिससे टकराकर ये बिखर जाते हैं।

एक लम्बी, जटिल और कठिन प्रक्रिया से गुजरकर ही इस बुरी स्थिति से निजात पाई जा सकती है। इसके लिए छोटे-छोटे पार्टी संगठनों के नेतृत्व का राजनीतिक तौर पर परिपक्व होना बुनियादी शर्त है इस दिशा में बहुत सचेत और गंभीर प्रयास किये जाने की जरूरत है।

जिन बुनियादी विचारधारात्मक और राजनीतिक मतभेदों के चलते कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन टूट-फूट और बिखराव को शिकार है, उनको हल किये बिना एकता के सभी प्रयास असफल होने के लिए अभिशप्त हैं। इस तरह हासिल की गई अवसरवादी एकता बहुत जल्दी ही फिर फूट में परिणत हो जाती है क्योंकि फूट का बुनियादी आधार मौजूद रहता है।

आंदोलन में टूट-फूट व बिखराव की स्थिति के चलते और कई ग्रुपों के संकीर्णतावादी रवैये के परिणामस्वरूप आंदोलन में अराजकतावाद की भी प्रवृत्ति पैदा हो रही है। यह कई रूपों में अभिव्यक्त हो रही है। कहीं यह केन्द्रीयता के मुकाबले जनवाद पर जोर देने में हो रही है, कहीं यह रूप पर जोर देने में हो रही है, कहीं यह पार्टी के बदले ट्रेड-यूनियन पर जोर देने में हो रही है, कहीं यह पार्टी के बदले सशस्त्र दस्तों पर जोर देने में हो रही है तो कहीं यह अपने चरम पर पहुंचकर ग्रुपों को भंग कर देने में उनके औपचारिक अस्तित्व को तिरोहित कर देने में हो रही है। ग्रुप विहीन कम्युनिस्ट आंदोलन और वहां से अखिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी बनाने की ओर प्रस्थान इस प्रवृत्ति की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है। कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन में जन्म ले रही अराजकतावाद की इस प्रवृत्ति को शुरू में ही कुचल देने की जरूरत है।

अराजकतावाद की एक छोटी लेकिन अत्यन्त घातक प्रवृत्ति है स्वच्छन्द क्रांतिकारियों का पैदा होना। ये गैर पार्टी क्रांतिकारी अक्सर ही पहले किसी ग्रुप के सदस्य होते हैं जो बाद में अपने खिलाफ होने वाले संघर्ष से पलायन करके या टूट-फूट से शह पाकर स्वच्छन्द क्रांतिकारी बन जाते हैं कई कम्युनिस्ट ग्रुपों द्वारा ऐसे व्यक्तियों से सांठ-गांठ इन स्वच्छन्द क्रांतिकारियों का मनोबल बढ़ती रहती है और अन्य नये स्वच्छन्द क्रांतिकारियों के पैदा होने की जमीन तैयार करती है।

इसी के साथ कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन में एक अन्य गलत प्रवृत्ति मौजूद है। यह है एक संगठन के भगोड़े लोगों को अन्य संगठनों द्वारा पनाह। ये भगोड़े लोग नये संगठन में भी कोई सार्थक योगदान नहीं करते बल्कि उनको टिकाये रखने के लिए उस संगठन को काफी अवसरवाद करना पड़ता है और इस तरह आंदोलन में अवसरवादी प्रवृत्तियों को बढ़ावा मिलता है। इन भगोड़े लोगों को अन्य संगठनों में पनाह मिलने से संगठनों के भीतर व्यक्तियों की कमियों/कमजोरियों के खिलाफ संघर्ष काफी कमजोर पड़ता है। इससे कुल मिलाकर कम्युनिस्ट क्रांतिकारी संगठनों के परिपक्व होने के प्रक्रिया में बाधा पैदा होती है।

भारतीय कम्युनिस्ट आंदोलन के वर्तमान दौर में एक गलत प्रवृत्ति यह भी मौजूद है कि कई सारे कम्युनिस्ट क्रांतिकारी ग्रुप आंदोलन की वस्तुगत जरूरतों से प्रस्थान न कर अपने नेतृत्व की रूचियों, उसकी पसन्दगियों-नापसंदगियों से प्रस्थान कर रहे हैं। इसके चलते इनके न चाहते हुए भी पूरा का पूरा संगठन एक खास मनोवृत्ति और सांचे में ढल जाता है तथा कई बार वह अपनी सारी ऊर्जा ऐसी चीजों में खपाता है जो आंदोलन की वर्तमान स्थिति में दूसरी-तीसरी प्राथमिकताओं के काम हैं। एक अखिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी होने पर नेतृत्व के इन भटकावों पर आसानी से और कई बार तो स्वतः ही रोक लग जाती परन्तु आज इस प्रवृत्ति को सचेत तौर पर और तीखा संघर्ष कर खत्म करने की जरूरत है।

भारत में नारीवादी और दलित आंदोलन के उभार के दौर में एक अन्य गलत प्रवृत्ति भी कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन में उभर रही है। कुछ ग्रुप सामाजिक अपंगता को खत्म करने के नाम पर पार्टी में नारी और दलित पृष्ठभूमि के साथियों को वरीयता देने की बात कर रहे हैं और वह भी वर्ग के समानान्तर। इसी तरह कुछ ग्रुप दलित संगठनों के निर्माण की बात कर रहे हैं। ये बातें गलत हैं। कम्युनिस्ट पार्टी पहले से मौजूद दलित संगठनों में तो कार्य कर सकती है पर उनका निर्माण नहीं करेगी। इसी तरह वह दलित बुर्जुआ पार्टियों के प्रति नरमी का कोई रूख नहीं

अपनाएगी। हां, इसके बरक्स कम्युनिस्ट पार्टी नारी मुक्ति के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए नारी संगठन का निर्माण करेगी। जहां तक पार्टी में विभिन्न पृष्ठभूमि के साथियों को वरीयता देने की बात है तो वहां वर्गीय मापदंड का सख्ती से पालन किया जाना चाहिए।

अन्ततः, शासक वर्गों का तख्ता उखाड़ फेंक कर सर्वहारा अधिनायकत्व कायम करने वाली हमारी यह कम्युनिस्ट पार्टी मूलतः एक गुप्त पार्टी ही हो सकती है। सभी कानूनी स्थितियों का फायदा उठाने के लिए वह अपना एक हिस्सा खोल सकती है लेकिन तब भी उसका मूल हिस्सा गोपनीय ही होगा। दमन तीखा होने की स्थिति में तो यह पूर्णतः गोपनीय ही होगी। मूलतः गोपनीयता की पार्टी की यह स्थिति तब भी होगी जब पार्टी पर कानूनी तौर पर प्रतिबन्ध न लगा हो। अखिल भारतीय पार्टी के अभाव में कम्युनिस्ट क्रांतिकारी ग्रुपों को भी गोपनीयता के इसी उसूल का पालन करना चाहिए।

❑ ❑ ❑